CONSTITUTION (FOURTH AMENDMENT) BILL

PRESENTATION OF REPORT OF JOINT COMMITTEE.

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): I beg to present the Report of the Joint Committee on the Bill further to amend the Constitution of India.

Mr. Chairman: I understand that a note of dissent is appended to this Report, but it is not appended to the Report as it is usually done. The hon. gentleman who wanted to attach this note of dissent, Shri Surendra Mahanty, of the Rajya Sabha, placed the note in the hands of the Office one day earlier than the conclusion of the consideration of the Report. This is the first instance of its kind. I have never seen a note of dissent appended in this manner—before the Report was completed and finally considered. He has also said that he would like to retain certain parts of his note of dissent only and the rest may be exorcised if the Report takes a particular form. It is very difficult for the Office to tamper with a note of dissent. I, therefore, am not inclined to accept this note in this manner. This is my first impression. I would like that the hon. Speaker takes the entire matter into consideration and passes such orders as he thinks fit. If he accepts the note of dissent, it will be appended to the Report and circulated; otherwise, it will not be treated as part of the Report.

DEMANDS FOR GRANTS FOR 1955-56.

DEMANDS *re* MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS.

श्री जवाहरलाल नेहरू : पहली बात तो मैं बहुत अदब से यह पेश करना चाहता हूं कि न हमारी इच्छा है और न हमारी शक्ति है कि हम सब दुनियां को अपनी मर्जी से चलायें। अकसर लोक-सभा के सदस्य हम से नाराज होते हैं कि यह क्यों नहीं किया, वह क्यों नहीं किया, उस मुल्क में यह आफत क्यों आई और वहां किसी ने गलत बात क्यों की गोया सारी दुनिया हमारे कब्जे में है और हम से सलाह मशाविरा कर के काम किया करती है। जाहिर है, कि यह बात नहीं है। दुनिया तो बहुत बड़ी चीज है, हमारे देश में बहुत सारी बातें होती हैं, जैसे कि हर देश में हुआ करती हैं, जो कि हमारे काबू में नहीं हैं। अगर इस लोक-सभा की शक्ति होती कि जो हमारे मन में है उस को हम एक दम से देश में कर दें, तो हम देश के सारे दुःख खत्म कर देते, सब बातें पूरी हो जातीं और यहां के सब २६, २७ करोड़ लोग खुशहाल होते, उन के लिये काम काज होते और कोई कठिनाई या तकलीफ नहीं रहती। जाहिर है कि हम यह नहीं कर सकते। समय लगता है, काम कठिन है। अगर्चे हम उस रास्ते पर जा रहे हैं, लेकिन समय लगता है इन बातों के करने में। कम से कम मैं तो इस में विश्वास नहीं करता कि इस में आसमान, तारों या ज्योतिष की कुछ जिम्मेदारी है और जो लोग इस में विश्वास रखते हैं वह गालिबन असलियत नहीं देखते, इसी विश्वास में पड़े रहते हैं। तो टीका करनी इस बात की कि वहां यह क्यों नहीं हुआ और वहां क्यों यह खराबियां हैं, ठीक है, खास कर जनता के द्वारा। लेकिन जो बात हमें देखनी है वह यह नहीं कि हमारे दिमाग की बातें, हमारे स्वप्न, हमारे ख्वाब क्यों नहीं पूरे हुए, बल्कि यह कि जिधर हम जा रहे हैं वह ठीक रास्ता है या नहीं। मुमकिन है कि हल्के हल्के काम हो, आखिर दुनियां में कोई बात हो, कोई मुल्क तरक्की की तरफ अपने को ले जाय, तो यहां कोई ऐसा नहीं है जो न चाहे कि और देशों की तरक्की न हो। जरूर होनी चाहिये, जल्दी से जल्दी होनी चाहिये, लेकिन अगर आप मुझसे कहें कि मैं इस बात को कहूं कि वह जल्दी हो जाय, तो मैं ऐसा कहने के लिये तैयार नहीं हूं। इस के माने यह नहीं है कि हमें अच्छा नहीं लगता है, यकीनन अच्छा लगता है, लेकिन हो सके तब ना। अगर हम ऐसा कहते हैं तो अपने को